

डॉ. लेस्ली एलन, विलापगीत, सत्र 9, विलापगीत 3: 34-51

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 9, विलाप 3:34-51 है।

इस वीडियो में, हम विलाप अध्याय 3 और श्लोक 34 से 51 को देखेंगे।

लेकिन मैं अध्याय 33 में एक फुटनोट जोड़ना चाहता हूँ और यह शब्द स्वेच्छा से, जिसे हमने हृदय से कहा, परमेश्वर की प्रकृति, परमेश्वर की अनिवार्य प्रकृति जो कभी-कभी उसे करने की आवश्यकता होती है, के विरुद्ध है। दो पाठ हैं, एक पुराने नियम में और एक नए नियम में, जो इसे पश्चाताप पर लागू करते हैं। एक पाठ यहजेकेल, अध्याय 18, श्लोक 23, और फिर श्लोक 32 में है।

यहजेकेल 18:33, 23. प्रभु परमेश्वर कहता है कि क्या मैं दुष्टों की मृत्यु से प्रसन्न होता हूँ, न कि इससे कि वे अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहें। और फिर बाद में पद 32 में, प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं किसी की मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता।

यह भाषा पतरस के दूसरे पत्र, 2 पतरस 3, और पद 9 में ली गई है। परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई नाश हो, बल्कि यह कि सभी पश्चाताप करें। ये पाठ अध्याय 3 के पद 33 में गुरु द्वारा कही गई बातों के बहुत अनुरूप हैं। वह स्वेच्छा से किसी को कष्ट या दुःख नहीं देता। लेकिन अब हम अपने नए छंद और नए पैराग्राफ की ओर बढ़ते हैं।

यह श्लोक 34 से 36 तक में स्वतः समाहित है। जब देश के सभी कैदियों को पैरों तले कुचल दिया जाता है, जब सर्वोच्च की उपस्थिति में मानव अधिकारों का हनन किया जाता है, जब किसी के मामले को उलट दिया जाता है, तो क्या प्रभु इसे नहीं देखते? यहाँ, हमारे पास समापन मुख्य वाक्य के साथ कई अस्थायी वाक्य हैं। और इस विशेष श्लोक के साथ प्रश्न उठते हैं।

किस तरह के समयों को ध्यान में रखा जा रहा है, और इस विशेष बिंदु पर विलाप के लिए कौन से समय प्रासंगिक हैं? और फिर, दूसरा, उस मुख्य खंड का क्या अर्थ है? तो, इन समयों की जांच करने का सवाल है, कब, कब, कब, और फिर पद 36 के अंत में वह अंतिम मुख्य खंड। और वह कहाँ है, आइए पहले उस अंतिम खंड को देखें। नए RSV में, क्या प्रभु इसे नहीं देखते हैं? और NIV उसी तर्ज पर है।

क्या प्रभु ऐसी चीजें नहीं देखेंगे? और इसलिए, उन दो संस्करणों के बीच सहमति है। लेकिन इसमें अस्पष्टता है और इसे एक बयान के रूप में लेना संभव होगा। यहाँ किसी प्रश्नवाचक का कोई सीधा संदर्भ नहीं है।

और इसलिए, आप इसका अनुवाद इस प्रकार कर सकते हैं, भगवान नहीं देखता। और एक टिप्पणीकार कम से कम इसे आगे ले जाता है और कहता है कि भगवान अंधा है। और इसलिए यहाँ धार्मिक भ्रम है।

यह एक निश्चित व्याख्या के साथ चलता है जिसका मैंने अध्याय 3 में पहले उल्लेख नहीं किया है, कि इसमें दोष को इंगित करने के बजाय वास्तव में ईश्वर के खिलाफ आरोपों की एक श्रृंखला शामिल है। और इसलिए यह एक रास्ता है जिस पर कोई जा सकता है, लेकिन वह नहीं जिस पर मैं चलना चाहता हूँ। लेकिन इसे एक प्रश्न के रूप में लिया जा सकता है।

यह आवाज़ के लहज़े पर निर्भर करता है। आम तौर पर, हिब्रू में, प्रश्न के पहले शब्द के अंत में एक विशेष छोटा तत्व होता है, जो श्रोता या पाठक को चेतावनी देता है कि कोई प्रश्न आने वाला है। लेकिन इसे छोड़ा भी जा सकता है, खासकर तब जब मुख्य वाक्य से पहले अन्य वाक्य हों।

और अंग्रेजी में भी कई बार ऐसा होता है। हम कह सकते हैं, आप आज दोपहर को खरीदारी करने जा रहे हैं। और हमारी आवाज़ का लहज़ा बताता है कि यह एक कथन है।

लेकिन हम इसे इस तरह से रख सकते हैं, आप आज दोपहर खरीदारी करने जा रहे हैं। और यह एक सवाल है। और इसलिए यह आवाज़ के लहज़े पर निर्भर करता है।

और हमारी समस्या यह है कि हिब्रू में प्रश्न चिह्न नहीं है। और इसलिए प्रश्न का कोई संकेत नहीं है। और कोई प्रश्न चिह्न नहीं है।

और इसलिए, यहाँ यह अस्पष्टता है। लेकिन कुल मिलाकर, ऐसा लगता है कि प्रभु इसे एक प्रश्न के रूप में नहीं देखते हैं। लेकिन फिर एक तीसरा विकल्प है कि हम इसे एक कथन के रूप में ले सकते हैं और उस क्रिया को दूसरा अर्थ दे सकते हैं। और कई टिप्पणीकार और अनुवाद ऐसा करते हैं।

क्रिया 'देखो' का विशेष अर्थ यह है कि भगवान इस पर ध्यान नहीं देते। भगवान इस पर स्वीकृति की दृष्टि से नहीं देखते। और इसलिए, अंत में हमें वही अर्थ मिलता है जो हमें प्रश्न के साथ मिलता है।

मुझे इस प्रश्न से ज़्यादा इस बात पर यकीन है कि विलाप की पुस्तक में कई बार, हमने इस क्रिया को एक दिव्य विषय के साथ देखा है। और इसका हमेशा कहीं और अर्थ होता है किसी समस्या पर ध्यान देना और उसके बारे में कुछ करने की दृष्टि से। और शायद यहाँ भी यही मामला है।

और यह एक सवाल की ओर इशारा करता है: क्या प्रभु इसे नहीं देख पा रहे हैं? लेकिन फिर दूसरी समस्या के बारे में क्या? ये अस्थायी खंड किस बात का उल्लेख कर रहे हैं? खैर, वे स्पष्ट रूप से उस आपदा की स्थिति का उल्लेख नहीं कर रहे हैं जो हमारे पास पहले भी रही है। आप जानते हैं, यहूदा पर आक्रमण, 18 महीने की लंबी घेराबंदी के बाद यरूशलेम पर कब्ज़ा। ऐसा लगता है कि हम यहाँ अतीत में नहीं रह रहे हैं।

और वह पिछली आपदा और उससे होने वाली परेशानी। इसके बजाय, ऐसा लगता है कि यह मण्डली की समकालीन स्थिति को देख रहा है। उनके लिए, घेराबंदी खत्म हो गई थी।

उनके लिए, युद्ध समाप्त हो चुका था। और वे युद्ध के बाद की परिस्थितियों में थे। लेकिन परेशानी अभी भी बहुत थी क्योंकि अब वे एक कब्जे वाले देश में थे और उन पर सैन्य कब्ज़ा था।

और इससे अपनी ही समस्याएँ खड़ी हो गईं। हम पाएंगे कि अध्याय 5 उसी समकालीन स्थिति से संबंधित है। लेकिन यह छंद वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए मार्ग प्रशस्त करता है।

और इसलिए, ये सामान्य परिस्थितियाँ उस मण्डली के लिए बहुत प्रासंगिक हैं जहाँ वे अभी हैं, बजाय इसके कि वे शोक में शामिल हों, जो हुआ था, एक भयानक आपदा थी, या उसके कारण जो भयानक संकट हुआ था, उसके बारे में निरंतर शोक मनाएँ। आपको अचानक वर्तमान में लाया जाता है। और वहाँ युद्ध के कैदियों के साथ कब्जे वाली सेना द्वारा किए गए बुरे व्यवहार का उल्लेख है जब देश के सभी कैदियों को पैरों तले कुचल दिया जाता है।

यही वे देख रहे थे और अनुभव कर रहे थे। और यह सब एक सामान्य नीति का हिस्सा था, एक बुरी नीति जो पद 35 में व्यक्त की गई है। मानवाधिकारों का हनन किया जा रहा था।

मानवाधिकारों का हनन हो रहा था। ये दुखद परिस्थितियाँ वे थीं जिनका वे हर समय सामना कर रहे थे, लेकिन सर्वोच्च की उपस्थिति में ये बढ़ गईं।

यह उस अंतिम अंतिम खंड के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहा है। लेकिन वहाँ पहुँचने से पहले, हमें अन्याय की सामान्य नीति का एक और विवरण मिलता है जिसे मण्डली देख रही थी और अनुभव कर रही थी। जब किसी का मामला उलट दिया जाता है, तो आप अधिकारियों से शिकायत करते हैं, और कुछ नहीं होता।

परमप्रधान की उपस्थिति में। और यह परमेश्वर, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, सब कुछ देखने वाले परमेश्वर के लिए एक नया शब्द है।

और इसलिए अंत में सीधे सवाल में यह बात उठाई गई है: क्या प्रभु इसे नहीं देख रहे हैं? और इसलिए यह आश्वासन है। जैसा कि एक टिप्पणीकार कहते हैं, यहोवा न्याय का चैंपियन है, और इन बुरी स्थितियों से निपटने के लिए उस पर भरोसा किया जा सकता है। इसलिए, यहाँ आश्वासन है, सात्वना है।

और यह शिकायतों का सवाल है। मैंने पहले भी उल्लेख किया है कि यशायाह अध्याय 10 में सभी महत्वपूर्ण भविष्यवाणियों में आक्रमण, उसके बाद विदेशी आक्रमण शामिल था, और, उस मामले में, यह अशशूरियों का आक्रमण था। यह अंश यह कहकर शुरू होता है कि अशशूर मेरे क्रोध की छड़ी है, और मैं यहूदा को दंडित करने के लिए अशशूर का उपयोग कर रहा हूँ।

हाँ, ठीक है। लेकिन फिर यह यहूदियों की शिकायत को उठाता है, और कहता है, लेकिन अशूर ने मेरी अपेक्षा से अधिक किया और तुम्हें उससे अधिक सज़ा दी, जितनी मैं चाहता था। और इसलिए, उन्हें बदले में सज़ा मिलनी चाहिए।

और इसलिए ये दो पक्ष थे, यहूदा की सज़ा, हमलावर सेना की ओर से सज़ा की अधिकता, और फिर उससे परे, ईश्वर के हस्तक्षेप से, अशूरियों को बदले में सज़ा देने की ज़रूरत थी। और वह दो-तरफ़ा नीति, वह दूसरा भाग यहाँ उठाया जा रहा है, क्योंकि यहाँ एक शिकायत है, यहाँ एक शिकायत है। इस सैन्य कब्जे के संदर्भ में, कोई भी तुरंत यशायाह अध्याय 10 के बारे में सोचता है, और यह यहाँ कितना प्रासंगिक है कि इस तरह की शिकायत को जारी रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी; इससे निपटा जाएगा।

तो, यह शक्तिशाली ईश्वर, वह सब कुछ जानता है, और वह मानव अधिकारों के इस हनन को बर्दाश्त नहीं करेगा। ईश्वर आपके पक्ष में है। और यहाँ एक छोटा सा संकेत है, सुनिश्चित करें कि आप पश्चाताप करके ईश्वर के पक्ष में हैं।

और यह वह बिंदु है जिस पर वह बहुत जल्द आने वाला है। हम श्लोक 37 से 39 तक आते हैं, और यह श्लोक 40 से 41 में प्रार्थना के लिए बुलाए जाने से पहले का अंतिम छंद है। हम कह सकते हैं कि यह उपदेश का अंतिम बिंदु है जो श्लोक 40 और 41 में वेदी के आह्वान से पहले आता है।

यहाँ, मॉनीटर, मार्गदर्शक, न्याय और उद्धार के उस पैटर्न पर वापस लौटता है जिसे उसने 31 से 33 में निर्धारित किया था। और वह यहाँ कहता है, हमें सिर्फ़ जो मैं पढ़ रहा हूँ उससे ज़्यादा ध्यान से देखना होगा। अगर प्रभु ने आदेश नहीं दिया है तो कौन आदेश दे सकता है और उसे करवा सकता है? क्या यह सर्वोच्च के मुँह से नहीं है कि अच्छा और बुरा आता है? कोई भी जो साँस लेता है, उसे अपने पापों की सज़ा के बारे में शिकायत क्यों करनी चाहिए? उस सवाल के साथ एक समस्या है। वास्तव में, श्लोक 37 में वह पूरा सवाल, अगर प्रभु ने आदेश नहीं दिया है तो कौन आदेश दे सकता है और उसे करवा सकता है? और इसका उत्तर स्पष्ट रूप से कोई नहीं है, कोई भी नहीं।

यदि प्रभु ने इसे निर्धारित नहीं किया है, तो कोई भी इसे आदेश नहीं दे सकता और इसे पूरा नहीं करवा सकता। और इसलिए यह ऐसा ही है। लेकिन हमारे सामने एक समस्या है जहाँ तक हिब्रू का सवाल है, वह यह है कि "यदि" शब्द वहाँ नहीं है।

उस शब्द "अगर" को नए RSV और NIV में कुछ अर्थ निकालने के लिए रखा गया है। लेकिन अगर आपके पास वह शब्द "अगर" नहीं है, तो आपको फिर से सोचना होगा कि इसका क्या अर्थ है। और इसका मतलब है, उदाहरण के लिए, कि दूसरा खंड यह नहीं है कि अगर प्रभु ने इसे नियुक्त नहीं किया है, लेकिन यह एक सवाल है, क्या प्रभु ने इसे नियुक्त नहीं किया है? और इसलिए, कौन आदेश दे सकता है और इसे करवा सकता है? भगवान।

ईश्वर ही वह है जो आदेश और आज्ञा दे सकता है और उसे पूरा करवा सकता है। और क्या प्रभु ने इसे निर्धारित नहीं किया है? जो बात मुझे और कुछ अन्य टिप्पणीकारों को इस वैकल्पिक व्याख्या की ओर ले जाती है, वह यह है कि यह उस तरह की भाषा को अपनाता है जिसका इस्तेमाल पहले विलाप में किया गया था। अध्याय 1 की 17वीं आयत में, प्रभु याकूब के विरुद्ध आदेश देता है कि उसके पड़ोसी उसके शत्रु बन जाएँ।

और हमने इसे निर्वासन-पूर्व भविष्यवाणी से जोड़ा, कि यहूदा को दण्डित करने के लिए परमेश्वर की इच्छा की घोषणा थी। और इसलिए, पड़ोसी यहूदा के शत्रु बन गए। और फिर 2:17 में, हमारे पास एक समान संदर्भ था।

प्रभु ने वही किया जो उन्होंने तय किया था। उन्होंने अपनी धमकी को पूरा किया है जैसा कि उन्होंने बहुत पहले तय किया था, और हमने इसे निर्वासन-पूर्व भविष्यसूचक रहस्योद्घाटन पर लागू किया।

और वहाँ, वह शब्द ठहराया वही इब्रानी शब्द और वही अंग्रेजी शब्द है जो वहाँ पद 47 में आता है। और साथ ही, करना, प्रभु ने किया है, यह उस शब्द किया के साथ आता है। और इसलिए, यह निर्वासन-पूर्व समय में भविष्यवाणी के रहस्योद्घाटन का संदर्भ प्रतीत होता है।

और इसलिए, यह उस नीति का वारंट है जिसके बारे में अब गुरु बोल रहे हैं। और वह इसी तरह आगे बढ़ते हैं। क्या यह सर्वोच्च, सर्वशक्तिमान ईश्वर के मुख से नहीं है, जो भविष्यवक्ताओं के माध्यम से बोल रहा है कि अच्छा और बुरा आता है? खैर, हमने पहले इसकी आलोचना की थी।

यह वाकई बुरा और अच्छा है। यह भगवान की दोतरफा नीति है। सज़ा ज़रूरी थी, लेकिन यह अंत नहीं था।

और वास्तव में, इस बात पर जोर दिया गया है कि यदि यहूदा अपने पापों का पश्चाताप करे तो भविष्य में अच्छाई आएगी। और जैसा कि मैंने कहा, यह निर्वासन-पूर्व की भविष्यवाणी का संदर्भ दे रहा है। और विशेष रूप से होशे, यशायाह और यिर्मयाह ने दो-पक्षीयता की ओर इशारा किया था।

हाँ, न्याय तो होना ही था, लेकिन न्याय के बाद उद्धार आएगा। और इसलिए, यह अंतिम प्रकार की गारंटी है। यही भविष्यवक्ताओं ने कहा था।

परमेश्वर भविष्यवक्ताओं के माध्यम से यह कहता है, और आप निश्चित हो सकते हैं कि वह ऐसा करेगा। वह सर्वोच्च परमेश्वर है।

उसने सज़ा दी है। आप निश्चित हो सकते हैं कि वह उस नए अच्छे पक्ष को भी सामने लाएगा। और इसलिए यह दोहरे भविष्यसूचक संदेश का सारांश है।

पहले अच्छा, पहले बुरा, और फिर अच्छा। और इसे सर्वोच्च परमेश्वर के लिए इस शक्तिशाली उपाधि से पुष्ट किया गया है। लेकिन सज़ा एक ज़रूरी पहला कदम होना चाहिए।

और इसलिए, श्लोक 39, जो कोई भी साँस लेता है, उसे अपने पापों की सज़ा के बारे में शिकायत क्यों करनी चाहिए? या, जैसा कि एनआईवी कहता है, कोई भी जीवित व्यक्ति। आप उत्तरजीवी हैं, और इससे आराम पाएँ और इससे आश्वासन पाएँ। आप उत्तरजीवी हैं, और परमेश्वर के पास अभी भी आपके लिए एक उद्देश्य है।

आप आक्रमण और घेराबंदी आदि की भयानक परिस्थितियों में नहीं मरे, जैसा कि बहुत से लोग मरे। इसलिए, इसे एक शुरुआत के रूप में लें, ताकि आप अपने जीवन में कुछ नया कर सकें जो परमेश्वर करने जा रहा है। आप जीवित हैं, एक उत्तरजीवी हैं।

जैसे मैं अपने बचने पर खुश था, वैसे ही आपको भी होना चाहिए। तो आपको अपने पापों की सज़ा के बारे में शिकायत क्यों करनी चाहिए? बेशक, आपको यह एहसास होना चाहिए कि आपके पापों की सज़ा मिल रही है, और इसलिए आपको पश्चाताप करने की ज़रूरत है। लेकिन आगे बढ़ने से पहले, हमें उस शब्द को बंद करना होगा: शिकायत।

शिकायत करना। यह एक ऐसा शब्द है जो हिब्रू बाइबिल में केवल दो बार आता है, और यह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पेंटाट्यूकल कथाओं में, जब हम जंगल में इस्राएल के बारे में सीखते हैं, तो हम पाते हैं कि वे अक्सर शिकायत करते हैं।

लेकिन हम अक्सर इस तथ्य पर विचार नहीं करते कि दो तरह की शिकायतें थीं, और एक तरह की शिकायत को भगवान ने स्वीकार किया, दूसरे को भगवान ने कहा, बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं, तुम्हें इस तरह से शिकायत नहीं करनी चाहिए। और यह विशेष क्रिया, शिकायत, पेंटाट्यूकल आख्यानों में केवल एक बार आती है जो इस्राएल द्वारा की गई शिकायत के बारे में है। यह संख्या 11 की आयत 1 में है। अब, जब लोगों ने चंगाई में, प्रभु के सामने अपनी दुर्भाग्य की सुनवाई में शिकायत की, तो प्रभु ने इसे सुना, और उसका क्रोध भड़क उठा।

फिर, प्रभु की आग उनके विरुद्ध भड़क उठी और छावनी के कुछ बाहरी हिस्सों को जला दिया। लेकिन लोगों ने मूसा को पुकारा, और मूसा ने प्रभु से प्रार्थना की, और आग शांत हो गई। लेकिन यह एक कठोर प्रतिक्रिया है।

परमेश्वर कहता है, नहीं, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई शिकायत करने की? और वह इसे एक नाजायज़ शिकायत मानता है। और जैसे-जैसे अध्याय आगे बढ़ता है, यह परमेश्वर के मन्ना के प्रावधान को अस्वीकार करना है। हमें अब मन्ना नहीं चाहिए।

हमने मिस्र में जो अच्छा खाना खाया, उसका लुत्फ़ उठाया और यह वास्तव में पलायन की अस्वीकृति है। इसलिए, यह एक नाजायज़ शिकायत है और यही क्रिया है, यही क्रिया, जिसका इस्तेमाल किया गया है। दूसरी ओर, निर्गमन और संख्या में, आपको एक शिकायत मिलती है। निर्गमन 15 और 16 और संख्या 16 में, आपको भोजन और पानी की वास्तविक ज़रूरत के बारे में शिकायतें मिलती हैं।

लोग भगवान से कहते हैं, हमारे पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है। भगवान ने कहा, ठीक है, मैं मन्ना उपलब्ध कराऊंगा। लोग शिकायत करते हैं कि हमारे पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है, तरल पदार्थ या पीने के लिए पानी नहीं है।

ठीक है, भगवान कहते हैं, मैं इसे प्रदान करूंगा। और इसे एक वैध शिकायत माना जाता है, और उन स्थितियों में एक और क्रिया का उपयोग किया जाता है। लेकिन यहाँ यह दृढ़ता से नकारात्मक क्रिया है, जो एक इनकार है, एक बुनियादी इनकार है, और बहुत कठोर तरीके से भगवान के खिलाफ खड़ा है।

और यही शिकायत यहाँ होती है, यही क्रिया है, संख्या 11 की शैली में उनके पाप की सज़ा के बारे में शिकायत। हम पापी नहीं हैं। आपने ऐसा कहने की हिम्मत कैसे की? नहीं, हम पापी नहीं हैं।

और इसलिए, यह ईश्वर की संपूर्ण इच्छा और उनकी परिस्थितियों की व्याख्या को अस्वीकार करना है। यह मुझे होलोकॉस्ट और एक ऐसे व्यक्ति की याद दिलाता है जो यहूदी धर्म का एक महान समर्थक और यहूदी ईश्वर का समर्थक था, एली विज़ेल। उसने होलोकॉस्ट की निंदा की, और उसने ईश्वर के खिलाफ़ कड़े शब्दों में कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिए था, और ईश्वर ऐसा होने की हिम्मत कैसे कर सकता है? लेकिन वह एक आस्तिक बना रहा, वह एक आस्तिक बना रहा, और उसने बहुत प्यार से लेकिन बहुत दृढ़ता से उन यहूदियों के खिलाफ़ लिखा जिन्होंने ईश्वर में अपना विश्वास छोड़ दिया था।

और उन्होंने कहा कि यह गलत तरीका है। शिकायत करने का एक तरीका है, शिकायत करने का एक सही तरीका है, और शिकायत करने का एक गलत तरीका है। और अगर इसका मतलब है ईश्वर में अपना विश्वास छोड़ देना और ईश्वर के खिलाफ़ बुनियादी 'नहीं' का रुख अपनाना, तो ऐसा नहीं होना चाहिए।

और निश्चित रूप से, मैं अपने जीवन में ऐसा नहीं होने देता। मैं जो कुछ भी हुआ है, उसके लिए खेद व्यक्त करता हूँ, जैसा कि आप करते हैं, लेकिन मैं अपने विश्वास को छोड़ने की हद तक नहीं जाता। और यहाँ यही भावना है, कि आगे बढ़ने का रास्ता, आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता, पश्चाताप करना है, फिर से ईश्वर के साथ सही संबंध बनाना है।

लेकिन अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया, तो मेरी बात, बात, बात, आप जानते हैं, इस बारे में कुछ नहीं कहा गया है, इसे कहने की हिम्मत नहीं है। लेकिन आगे बढ़ने का तरीका यहाँ श्लोक 40 और 41 में घोषित किया गया है। और पश्चातापपूर्ण प्रार्थना के लिए आह्वान किया गया है।

और यहाँ गुरु ने खुद को मण्डली के साथ जोड़ा है। आइए हम अपने तरीकों को परखें और जाँचें और प्रभु के पास लौटें। आइए हम अपने दिलों के साथ-साथ अपने हाथों को भी स्वर्ग में परमेश्वर की ओर उठाएँ।

वह आगे कहते हैं कि हमने अपराध किया और घृणा की, और आपने क्षमा नहीं की। लेकिन सबसे पहले, 41 से 42, जो पश्चातापपूर्ण प्रार्थना का आह्वान है। और फिर 42 से 47, यह एक

आदर्श प्रार्थना का सुझाव है जिसे शायद कोई व्यक्ति भगवान के पास ला सकता है, जो मण्डली को सुझाया गया है।

लेकिन सबसे पहले, 40 से 41 एक कॉल है। आपके हिस्से के लिए आगे बढ़ने का एकमात्र तरीका वह है जो आपको परमेश्वर द्वारा अपना अच्छा हिस्सा करने से पहले करने की आवश्यकता है। करने वाली बात यह है कि आत्म-परीक्षण द्वारा अपराध स्वीकार करें। परिणामस्वरूप, आप अपने पापों को स्वीकार करेंगे और प्रभु के पास लौट आएंगे।

आपको एहसास होता है कि आपने परमेश्वर को त्याग दिया है, और आपने परमेश्वर की सज़ा को लागू कर दिया है। और इसलिए, आपको परमेश्वर के दृष्टिकोण को अपनाकर पश्चाताप में वापस लौटने की ज़रूरत है कि आप कहाँ हैं। और इसलिए, श्लोक 41 में ईमानदारी के लिए एक आह्वान है: आइए हम अपने दिलों के साथ-साथ अपने हाथों को भी स्वर्ग में परमेश्वर की ओर उठाएँ।

और एक चेतावनी है: बस बाहरी हरकतें न करें, अपने हाथों को भगवान की ओर न उठाएं और कुछ शब्द न कहें, बल्कि वास्तव में इसका मतलब समझें और अपने हाथों के साथ-साथ अपने दिलों को भी ऊपर उठाएं। एक बाहरी प्रतिक्रिया होनी चाहिए, हाँ, लेकिन यह एक आंतरिक प्रतिक्रिया को भी दर्शाना चाहिए। और यह अध्याय 2 और श्लोक 19, 2:19 में पहले कही गई बातों के बिल्कुल अनुरूप है।

उठो, रात में चिल्लाओ, प्रभु की उपस्थिति के सामने अपने दिल को पानी की तरह उंडेल दो, और अपने बच्चों के जीवन के लिए अपने हाथों को उसके सामने उठाओ। और इसलिए, हाथ उठाना, लेकिन इसके साथ-साथ चलते हुए, अपने दिल को उंडेलना, इसलिए यह सार्थक है। और, बेशक, जैसा कि मैं कहता रहा हूँ, पूर्वधारणा यह है कि यह एक आवश्यक मानवीय कदम है यदि ईश्वर को बुराई से अच्छाई की ओर, दंड से अपने दृढ़ प्रेम को प्रदर्शित करने की ओर बढ़ना है।

और यह, जैसा कि मैंने पहले वीडियो में कहा था, पुराने नियम का ईश्वर की कृपा के लिए पिछला दरवाज़ा है। ईश्वर अच्छे व्यवहार और अच्छे इरादे आदि के सामने के दरवाज़े के दृष्टिकोण को स्वीकार करता है, लेकिन ऐसा न होने पर, विवेक और स्वीकारोक्ति का यह पिछला दरवाज़ा दृष्टिकोण है, और यह ईश्वर के पास वापस जाने का एक रास्ता है, वह दरवाज़ा जो खुला है। मैंने अब और फिर कहा है कि यहूदा के दुःख को देखने में एक सहायक समानांतर है कि संरक्षक किस तरह से निपट रहा है, इसे देखने का तरीका है कि शराबी बेनामी में क्या होता है।

और मैंने यह भी कहा है कि सभी दुख अलग-अलग होते हैं; दुख का जवाब देने का कोई एक मानक तरीका नहीं है। उदाहरण के लिए, अपराधबोध अक्सर इसमें शामिल नहीं होता है, और कभी-कभी अपराधबोध आत्म-दोष के संदर्भ में एक गलत कारक हो सकता है जो अनावश्यक और वास्तव में हानिकारक है। लेकिन निश्चित रूप से, शराब की लत की स्थिति में, जो एए के पीछे है, अपराधबोध बहुत अधिक है, इसे ऐसा नहीं कहा जाता है, लेकिन जिम्मेदारी लेने के संदर्भ में।

12-चरणीय कार्यक्रम में कुछ चरण हैं जो श्लोक 40 और 41 के बहुत करीब हैं। चरण 4 में कहा गया है कि स्वयं की खोजपूर्ण और निर्भीक नैतिक सूची बनायें।

और यह उस कार्यक्रम में एक आवश्यक चौथा कदम है। फिर आप चरण 5 पर जा सकते हैं, भगवान के सामने, खुद के सामने, और दूसरे इंसान के सामने अपनी गलतियों की सही प्रकृति को स्वीकार करें। और फिर स्वीकारोक्ति होती है।

और मुझे याद है, मुझे लगता है कि लगभग 10 साल पहले, मेरी बेटी का फ़ोन आया, जो शराब की लत से उबर रही थी, और वह 12-चरणीय कार्यक्रम के माध्यम से काम कर रही थी, और वह चरण 5 पर पहुँच गई थी, और उसने मुझे फ़ोन किया, और कहा, क्या मैं कल, कल दोपहर, रविवार दोपहर को आपसे मिलने आ सकती हूँ? हाँ, मैंने कहा ज़रूर। और वह आई और उसने कहा कि वह मेरे खिलाफ़ की गई गलतियों के बारे में कबूल करना चाहती है, जैसा कि उसे अब एहसास हुआ है। और वह चरण 5 पर काम कर रही थी, और कबूलनामा और पश्चाताप बहुत ज़्यादा था।

वह चरण 5 को बहुत गंभीरता से ले रही थी। इसलिए, यह अभी भी प्रासंगिक है, और जब हम शराबियों की स्थिति और कई अन्य मामलों को देखते हैं, तो विलाप जीवन में आते हैं, मुझे यकीन है। और फिर श्लोक 42 से 47, मैं एक आदर्श प्रार्थना के रूप में लेता हूँ।

और इसलिए हम इस पर आगे बढ़ेंगे। यह भजन विलाप प्रार्थना की तरह ही है, लेकिन इसमें पश्चाताप के तत्वों के साथ एक सामुदायिक विलाप है। ऐसे तत्व हैं जो गायब हैं जो हम आम तौर पर एक सामुदायिक विलाप में पाते हैं।

इसमें मदद के लिए कोई याचिका नहीं है, हालांकि श्लोक 44 में एक प्रार्थना का उल्लेख किया गया है, एक ऐसी प्रार्थना जिसका उत्तर नहीं दिया गया है। इसमें भरोसे की कोई पुष्टि नहीं है। लेकिन इसके अलावा, यह एक पैटर्न का पालन करता है, खासकर पश्चाताप की प्रार्थना के संदर्भ में जहां ईश्वर के प्रति नकारात्मक संदर्भ हैं और साथ ही मानव शत्रुओं के हाथों शत्रुओं के अनुभवों का भी उल्लेख है।

और सबसे पहले, इसमें पश्चाताप का तत्व है, जो इस प्रार्थना का मुख्य आकर्षण है। हमने अपराध किया है और विद्रोह किया है, और आपने हमें माफ़ नहीं किया है। और यहाँ विद्रोह के लिए ये दो शब्द हैं।

पहला शब्द हमारे पास उल्लंघन के रूप में था, और दूसरा क्रिया, विद्रोही, हमारे पास पहले भी था, लेकिन अब उन्हें जोर देने के लिए एक साथ जोड़ दिया गया है। हमने उल्लंघन किया है और विद्रोह किया है, विद्रोह के लिए ये दो शब्द हैं। और आपने माफ़ नहीं किया है।

तुमने क्रोध से खुद को लपेट लिया है और बिना दया के हमें मार डाला है। भगवान ने माफ़ नहीं किया क्योंकि अभी तक कोई स्वीकारोक्ति नहीं हुई थी। अब जाकर स्वीकारोक्ति की बारी आई है।

लेकिन उन दिनों जब हमने आपके खिलाफ विद्रोह किया था, आपने हमें माफ नहीं किया और यह स्वाभाविक था क्योंकि माफी स्वीकारोक्ति के बाद ही मिलनी चाहिए और हम अब स्वीकारोक्ति ला रहे हैं। तो यह काफी हद तक उचित कथन है। लेकिन माफी के बजाय, आपने खुद को गुस्से में लपेट लिया और बिना दया के हमें मार डाला।

तो, क्रोध का यह उल्लेख है, जो प्रभु के दिन के संबंध में अध्याय 1 और अध्याय 2 में दर्शाया गया है। और यह अस्थायी लेकिन आवश्यक तरीका था जिससे परमेश्वर ने उस समय यहूदा के साथ व्यवहार किया। दया के बिना हत्या, यह हमारे पास पहले भी रहा है, निर्वासन से पहले के भविष्यवक्ताओं की प्रतिध्वनि जो इस शब्द का उपयोग करते हैं जब वे उस आपदा की आशंका के साथ आगे बढ़ते हैं जो इज़राइल या यहूदा पर आने वाली थी।

और फिर आपने खुद को एक बादल से लपेट लिया ताकि कोई भी प्रार्थना न गुजर सके। और यह अवरोध इसलिए था क्योंकि, वास्तव में, कोई स्वीकारोक्ति नहीं थी। केवल पाप था, और हम अपनी प्रार्थनाएँ ला रहे थे, हे प्रभु हमारी मदद करो, लेकिन हम अपने पापों का पश्चाताप नहीं कर रहे थे।

और तुमने हमें लोगों के बीच गंदगी और कूड़ा बना दिया। और इसलिए, दंड देने में परमेश्वर का हिस्सा, जिसके बारे में गुरु बोल रहे हैं। यह खुले में लाया गया है, और मण्डली यहाँ जो हो रहा है, उसके लिए आमीन कह रही है।

और इसलिए यह प्रार्थना है। अंत में, बेशक, यह मण्डली नहीं कह रही है, बल्कि गुरु उनके लिए कह रहा है, लेकिन इसका तात्पर्य यह है कि यह ऐसी प्रार्थना है जो आपको करनी चाहिए। और हमें अध्याय पाँच तक इंतज़ार करना होगा जब हमें यहाँ जो हो रहा है, जो यहाँ प्रस्तावित किया जा रहा है, उसके समान प्रार्थना मिलेगी।

और इसलिए अब, उम्मीद है, एक स्वीकारोक्ति होने जा रही है। लेकिन यह संकट जो परमेश्वर ने लाया है, यह आपदा जो परमेश्वर ने उन पर लाई है, 46 और 47 में आगे की खोज की गई है। हमारे सभी दुश्मनों ने हमारे खिलाफ अपना मुंह खोला है।

हम पर आतंक और संकट आ गया है, तबाही और विनाश। और इसलिए, ईश्वर की ओर से उस दंड के साथ-साथ, जैसा कि हमने देखा है, इसमें यह भी शामिल था कि ईश्वर मानव शत्रुओं का उपयोग कर रहा था, और वे अपना मुंह खोल रहे थे। और यह उपहास है, और यह अपमान है।

और इसलिए, यह 45 से जारी है, और आपने हमें लोगों के बीच गंदगी और कचरा बना दिया है। हमें नजरअंदाज किया जाता है। हमें बेकार लोगों के रूप में माना जाता है। और यह, जैसा कि हमने पहले कहा, दुख का दूसरा पहलू है।

आपदा एक कलंक ला सकती है जिसे दूसरे लोग पकड़ सकते हैं और आपको अपमानित करके आपको और अधिक पीड़ा पहुँचा सकते हैं, यह द्वितीयक पीड़ा है। और इसलिए, उस पर उनके दुख ने इसे और भी बदतर बना दिया। और फिर, इस शक्तिशाली कथन में, अंग्रेज अनुप्रास को पकड़ने की कोशिश करते हैं।

हिब्रू में अनुप्रास अक्सर जोर देने के लिए एक प्रभावी उपकरण है। और इसलिए घबराहट और खतरा, दो 'पी', और फिर तबाही और विनाश, दो 'डी'। यह अनुभव की गई आपदा की चरम सीमा की ओर इशारा करने का एक शक्तिशाली तरीका है।

और इसलिए हम यहाँ हैं। यहाँ उस आपदा और संकट का वर्णन है जिससे मण्डली गुज़री थी। लेकिन यहाँ, इसे पाप स्वीकारोक्ति के शीर्षक के अंतर्गत रखा गया है।

हमने अपराध किया है और विद्रोह किया है। आशा है कि इस स्वीकारोक्ति के साथ, भविष्य में क्षमा मिलेगी, जिसके लिए उन्होंने पहले तैयारी नहीं की थी। अब, उनके दिल और दिमाग में बदलाव आया है, और वे पश्चाताप की भावना को परमेश्वर के पास ले आए हैं।

और फिर अंत में, आज, 48 से 51 तक, यहाँ गुरु ने कार्यभार संभाला। बेशक, वह पश्चाताप की प्रार्थना के इस सुझाव के साथ पूरे समय बोलता रहा है। लेकिन अब वह खुद के लिए बोलने आया है।

मेरी आँखें बिना रुके, बिना रुके बहेंगी, जब तक कि स्वर्ग से प्रभु नीचे न देख लें और न देख लें। मेरी आँखें शहर की सभी युवतियों के भाग्य पर मुझे दुःख पहुँचाती हैं। पिछले वीडियो में, हम घायल मरहम लगाने वाले की अवधारणा के संदर्भ में अध्याय 3 का वर्णन कर रहे थे।

हम बता रहे थे कि कैसे कार जंग ने उस विचार को अपनाया और इसे दो तरीकों से लागू किया। एक चिकित्सक रोगी से निपटने में घायल हो सकता है और रोगी जिस दुखद स्थिति में खुद को पाता है, उससे अभिभूत हो सकता है। मैं यह भी कह सकता हूँ कि हेनरी नोवेन ने इसे एक देहाती तरीके से लागू किया।

उन्होंने भी द वाउंडेड हीलर नामक एक पुस्तक लिखी। उन्होंने इसमें उल्लेख किया कि एक पादरी के लिए यह खतरा हो सकता है कि वह अपने मण्डली के किसी ऐसे व्यक्ति से अभिभूत हो जाए जो उसके पास इतनी दुखद कहानी लेकर आता है। लेकिन जंग और नोवेन दोनों ने इसे एक पादरी के काम पर भी लागू किया जिसने पादरी बनने से पहले या इस वर्तमान पादरी के काम में शामिल होने से पहले कष्ट झेले हैं।

और जो मरहम लगाने वाला अक्सर घायल होता है, वही उस उपचार में सफल हो सकता है। और मुझे लगता है कि अध्याय 3 की शुरुआत और अंत में गवाही में, हमारे पास बहुत कुछ है, घायल मरहम लगाने वाला जो अपने पिछले अनुभवों के बारे में बात करता है, जो एक तरह से, मण्डली और खुद उसके हाल ही में अनुभव किए गए अनुभवों के समानांतर थे। और उसने भरोसा किया कि यह उनके लिए एक मदद होगी और वे उस पर भरोसा करेंगे कि वह समानांतर अनुभवों से गुजरा है।

लेकिन इसके अलावा, एक दूसरे तरह का घायल मरहम लगाने वाला भी होता है जिसे आप बर्दाश्त नहीं कर सकते। आप इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। आप इस कहानी को सुनते हैं और आपको यह बहुत भारी लगता है।

अब गुरु बहुत अभिभूत हैं। वह इसे मण्डली के पक्ष में एक उपकरण के रूप में उपयोग करता है क्योंकि उसे उम्मीद है कि वे भगवान के पास लौट आएं। मेरी आँखें बिना रुके, बिना रुके बहेगी, जब तक कि स्वर्ग से भगवान नीचे नहीं देखते और नहीं देखते।

और वह पुस्तक में पहले सिथ्योन की उस पुकार को उठाता है, देखो और देखो, देखो और देखो, परमेश्वर पर भरोसा करो। और वह इतनी उत्सुकता से आशा करता है, कि वह आँसू बहाने जा रहा है, जो उम्मीद है कि परमेश्वर को द्रवित करेगा और मण्डली की स्थिति पर अपना दुख व्यक्त करेगा। फिर वह एक आखिरी बिंदु और एक विशेष बिंदु सामने लाता है जो उसे चिंतित करता है।

मेरी आँखें युवाओं को देखकर, शहर की सभी युवतियों के भाग्य को देखकर दुःखी हो जाती हैं। और मैं, यह एक शाब्दिक अनुवाद है। एनआईवी थोड़ा स्पष्ट है।

मैं जो कुछ भी देखता हूँ, उससे मेरी आत्मा को बहुत दुःख होता है, क्योंकि मेरे शहर की सभी महिलाएँ ऐसी ही हैं। और वह एक उदाहरण प्रस्तुत करता है। और मैंने पहले कहा था कि पुस्तक में अध्याय घेराबंदी, कब्जे, घेराबंदी से कब्जे तक के प्रश्न से आगे बढ़ चुका है।

यह युद्ध के बाद की स्थिति में चला गया, देश के कैदियों को पैरों तले कुचला जा रहा था और मानवाधिकारों का हनन किया जा रहा था, पद 34 से 36 में किसी के मामले को विकृत किया जा रहा था। और वह वर्तमान स्थिति में वापस आता है क्योंकि उन आक्रमणकारी सैनिकों ने क्या किया? उन्होंने महिलाओं के साथ बलात्कार किया। उन्होंने यहूदी महिलाओं के साथ बलात्कार किया।

और गुरु स्टैनबैक हेल्पलेस और अन्य सभी यहूदी पुरुष थे। वे इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते थे। और इसलिए शहर की सभी युवतियों के भाग्य पर दुःख हुआ।

यह अतिशयोक्ति हो सकती है, यह सब नहीं था, लेकिन इतनी सारी महिलाएँ थीं कि उन विदेशी सैनिकों ने उन पर हमला किया और बलात्कार किया, और इससे उसे बहुत दुःख हुआ। इसके पीछे एक पुरुष मॉडल है जो कवच में एक शूरवीर होने की उम्मीद करता है, जो असहाय युवती की रक्षा करता है। लेकिन वह उस सुरक्षात्मक भूमिका का पालन नहीं कर सका।

उसकी शक्ति उससे छीन ली गई, कवच और वह असहाय था। और यह उसे इतना दुःखी करता है कि वह उस पारंपरिक पुरुष भूमिका का प्रयोग नहीं कर सकता, जो मेरे शहर की सभी युवतियों का भाग्य है। और यह सीधे तौर पर नहीं कहा गया है, लेकिन बलात्कार का उल्लेख सीधे अध्याय 5 में मण्डली के वर्तमान अनुभव की एक घटना के रूप में किया जाएगा।

अगली बार, हम श्लोक 52 से 66 पर आगे बढ़ेंगे और अध्याय 3 को समाप्त करेंगे।

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह सत्र 9, विलाप 3:34-51

है।